वैज्ञानिकों की दृष्टि में ईश्वर

The Evidence of God in Expanding Universe

संकलन
ज्ञानेश्वरार्य
M. Com, दर्शनाचार्य

प्रकाशक
वानप्रस्थ साधक आश्रम
आर्यवन, रोजड़, गुजरात-३८३३०७

ओ३म्

वैज्ञानिकों की दृष्टि में ईश्वर

The Evidence of God in Expanding Universe

प्रकाशक

वानप्रस्थ साधक आश्रम

आर्यवन, रोजड़, पत्रा. सागपुर, जि. साबरकांठा (गुज.) ३८३३०७

दूरभाष : (०२७७०) २८७४१७, २९१५५५, ९४२७० ५९५५०

E-mail : vaanaprastharojad@gmail.com

Web site : www.vaanaprastharojad.org

पुस्तक : *वैज्ञानिकों की दृष्टि में ईश्वर*

संकलन : *ज्ञानेश्वरार्यः*

प्रकाशन तिथि : *फरवरी २०१४.*

संस्करण : *प्रथम १०,०००*

मूल्य : *१०-०० रुपये*

मुख्य वितरक : आर्य रणसिंह यादव

द्वारा *डॉ. सद्गुणा आर्या*

'सम्यक्', कर्मचारी सोसायटी के पास,

गांधीग्राम, जूनागढ, (गुजरात)

प्राप्तिस्थान

१. **आर्यसमाज मंदिर**, महर्षि दयानन्द मार्ग, रायपुर दरवाजा बाहर, कांकरिया, अहमदाबाद.

२. **विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द**, ४४०८, नई सड़क, दिल्ली-६.

३. **ऋषि उद्यान**, आना सागर, पुष्कर रोड, अजमेर (राजस्थान) पिन-३०५००१

४. **श्री चंद्रेश आर्य**, ३१०-बी, साधु वासवाणी सोसायटी, गोपालपुरी, गांधीधाम (गुज.)

५. **वैदिक संस्थान**, एफ एफ-५, आदर्श कॉम्पलेक्स, मुरलीधर सोसायटी के सामने, ओढ़व, अहमदाबाद-३८२४१५ ।

६. **आर्यसमाज मन्दिर**, पोरबंदर, राजकोट, भरुच, मोरबी, टंकारा, भावनगर, जूनागढ़, गांधीनगर, आणंद, जामनगर आदि ।

-: भूमिका :-

आज जो मनुष्य धर्म, कर्मकाण्ड, ईश्वर, आदि विषयों में आस्था रखते हैं, वे प्रायः विज्ञान से वियुक्त हैं और जो भौतिक विज्ञान, यन्त्र, सिद्धान्त, कला, निर्माण, प्रबन्ध, व्यवस्था, तकनीकी आदि विशेषताओं से युक्त है वे प्रायः अध्यात्म सम्बन्धी विषयों से उपेक्षित हो गये हैं। यदि विज्ञान धर्म से युक्त नहीं है तो अन्धा है और धर्म यदि विज्ञान से युक्त नहीं है तो अपंग है। विदेशों की बात क्या करें अब तो प्रायः देश में भी ईश्वर उपासना, स्वाध्याय, सत्संग, यज्ञ, जप, सात्विक भोजन, नियमित व्यायाम आदि से सम्बन्धित विषय गौण हो गए हैं इसका कारण शिक्षा में से अध्यात्म विषय को हटा देना।

वैदिक जीवन पद्धति में तो ईश्वर एक महत्त्व पूर्ण केन्द्रबिन्दु है। वही जीवन का उत्पादक, संचालक, रक्षक, प्रेरक है ऐसा माना गया है। इसके बिना जीवन नितान्त अपूर्ण है। बिना ईश्वर में श्रद्धा, विश्वास के मनुष्य दुःख, पीड़ा, बन्धन, भय, शोक, चिन्ताओं से घिरा रहता हैं अतः वैदिक धर्म में ईश्वर को जानकर, समझकर उसके प्रति विश्वास, श्रद्धा, प्रेम, निष्ठा बनाकर, उसके साथ सतत सम्पर्क बनाये रखने का निर्देश किया गया है। इसकी कमी होने के कारण ही आज न केवल व्यक्तिगत अपितु सामाजिक, राष्ट्रीय एवं वैश्विक नैतिक जीवन स्तर गिर गया है।

पाश्चात्य वैज्ञानिकों में से अधिकांश ईश्वर विश्वास व धार्मिक क्रियाकाण्डों से उपेक्षित हो गये हैं। अनेकों ने तो ईश्वर व धर्म का घोर खण्डन किया है। जिनके कुछ उदाहरण यहाँ लिख रहे हैं।

"इस विज्ञान के युग में ईश्वर की मृत्यु हो गयी है।"

– नेशे

"ईश्वर व धर्म समाज में स्थान पाने के योग्य नहीं है।"

– बेकन

"यदि सचमुच कहीं ईश्वर मौजूद है तो उसका अस्तित्व मिटा देना चाहिए।" – बुकनिन

"आज धर्म का युग चला गया है और धर्म के स्थान पर विज्ञान ने जगह ले ली है।" – बर्थोले

"धर्म एक अफीम के समान है जो व्यक्ति को बेहोश बना देती है।" – कार्ल मार्क्स

पाश्चात्य प्रसिद्ध दार्शनिक वैज्ञानिकों ने ऐसी ही नास्तिकता सम्बन्धी मान्यताओं का विश्वभर में प्रचार–प्रसार किया है। आजकल न केवल पाश्चात्य भौतिक प्रधान देशों में अपितु भारत के शिक्षित वर्ग और बुद्धिजीवियों की भी ऐसी ही मानसिकता बनती जा रही है कि वास्तव में ईश्वर नाम की कोई वस्तु नहीं है, यह मात्र कल्पना है, उसकी उपासना, ध्यान, पूजा, स्तुति के लिए समय लगाना, धन लगाना, शक्ति लगाना व्यर्थ है। इन काल्पनिक निराधार मान्यताओं में कुछ भी नहीं रखा है, जीवन बहुत छोटा है, समय बहुत कम है और काम बहुत अधिक हैं अतः कुछ

करने-कराने की बात करनी चाहिए। इन व्यर्थ की बातों में समय नष्ट नहीं करना चाहिए।

इसका परिणाम यह हुआ है कि वर्तमान की नई पीढ़ी में नास्तिकता की मान्यता आंधी के समान दिनदुनी रातचौगुनी गति से बढ़ती जा रही है। यहाँ तक कि कुछ बुद्धिजीवियों ने तो ईश्वर को सिद्ध करने वालों को लाखों रुपयों का पुरस्कार देने की घोषणाएँ भी कर दी है।

जो व्यक्ति यह मानता है कि मैं शरीर के अतिरिक्त कुछ नहीं। जन्म से पहले मेरा कोई अस्तित्व नहीं था और मुत्यु के पश्चात् भी नहीं रहेगा। भूतों के योग से अकस्मात् मेरा शरीर बन गया है तथा मृत्यु के बाद मेरा अन्त है। संसार अकस्मात् बन गया है, संसार का बनाने वाला, संचालन करने वाला भी कोई ईश्वर नहीं है। सब कुछ स्वाभाविक है।

जो मनुष्य अपने आप को शरीर से भिन्न आत्मा नहीं मानता है, ऐसे व्यक्ति के विचार शरीर से परे जा ही नहीं सकते, वह तो बस इस शरीर को ही खिलाने, पिलाने, सजाने, सवांरने और इसकी रक्षा में ही लगा रहेगा। ऐसा व्यक्ति झूठ, छल, कपट, धोखा, विश्वासघात, अन्याय, शोषण आदि के माध्यम से भोग के साधनों का संग्रह करेगा और जब तक जीयेगा भोग विलास में ही लगा रहेगा।

ऐसे व्यक्ति के लिए सदाचार, अहिंसा, परोपकार त्याग आदि बातें कोई महत्व नहीं रखती हैं। ऐसा व्यक्ति समय, शक्ति, धन से दूसरे की सहायता क्यों करेगा ?

किसके लिए करेगा ? उसे बदले में क्या मिलेगा त्याग करने में ? दूसरा मनुष्य भूखा-प्यासा-नंगा है तो उसे क्या ? क्यों ऐसे झंझट में पड़ेगा ? वह सड़क पर गिरे व्यक्ति को क्यों उठायेगा ? अन्धे-लूले-लंगडे को क्यों रास्ता दिखायेगा ? भूखे-प्यासे को क्यों खिलायेगा ? दुर्घटना ग्रस्त व्यक्ति को वह क्यों उठाकर चिकित्सालय पहुँचायेगा ? बिलकुल नहीं करेगा, जैसा कि आज प्रायः देखते हैं।

आज के मानव समाज में ऐसी मान्यता वालें व्यक्तियों का जीवन प्रत्यक्ष देखने को मिलता है। खाओ-पीओ और मौज करो। उनकी यह मान्यता बन गयी है कि यह जीवन "प्रथम और अन्तिम है।" न पीछे था न आगे होगा। बस येन-केन-प्रकारेण जो कुछ भोगना है भोग लो, मृत्यु के पश्चात् सबकुछ समाप्त हो जायेगा। ऐसे व्यक्ति समाज, राष्ट्र, जाति, धर्म, संस्कृति के लिए कुछ भी नहीं करते हैं। क्योंकि वे ऐसा विचारते हैं कि ऐसा करने से मुझे क्या मिलेगा ?

शरीर को आत्मा मानने वालों के पास इसका उत्तर नहीं है, किन्तु शरीर से अलग नित्य आत्मा की सत्ता को मानने वाले और ईश्वर पर विश्वास करने वाले कहते हैं कि मृत्यु मेरा अन्त नहीं है, मेरे त्याग, बलिदान के बदले ईश्वर मुझे आन्तरिक सुख-शान्ति प्रदान करेगा और मेरा अगला जन्म उच्च स्तर का होगा।

संयोग से कुछ वर्ष पूर्व मेरे हाथ 'The Evidence of God in Expanding Universe' पुस्तक लगी जिसका प्रकाशन कुछ वर्ष पूर्व जनज्ञान प्रकाशन की ओर से हिन्दी रुपान्तर भी छपा था। मैंने इस पुस्तक में बहुत से पाश्चात्य आस्तिक वैज्ञानिकों के विचार पढें जो ईश्वर की सत्ता में प्रबल निश्वास रखते हैं, तो बड़ा हर्ष अनुभव हुआ। इस पुस्तक में से कुछ महत्त्वपूर्ण, वैज्ञानिकों के महत्त्वपूर्ण वाक्यों ही संग्रह करके छोटी सी पुस्तिका का आकार दिया है। आज की नयी पीढ़ी के लिए जो प्रायः नास्तिकता की ओर अग्रसर हो रही है उसको रोकने में यह पुस्तक समर्थ होगी, इसी आशा और विश्वास के साथ...

- ज्ञानेश्वरार्यः

अनुक्रमणिका

वैज्ञानिकों की दृष्टि में ईश्वर

प्रो. फ्रेंक ऐलन

(मानिटोबा विश्वविद्यालय, कनाडा)

थर्मोडायनेमिक्स (ऊष्मागतिकीय) नियमों से पता चलता है कि संसार ऐसी अवस्था को प्राप्त होता जा रहा है जबकि सभी पिण्डों का एक जैसा—अत्यन्त कम तापमान रह जायेगा और उनमें शक्ति भी शेष नहीं रहेगी तब प्राणियों का जीवन धारण करना असंभव हो जायेगा। अनन्त काल में शक्ति समाप्ति की यह अवस्था कभी न कभी तो आयेगी ही। यह इतनी गर्मी देना वाला सूर्य और तारे, असंख्य जीव धारियों को अपनी गोद में लपेटे यह पृथ्वी, इस बात के पक्के सबूत हैं कि सृष्टि का उद्भव किसी न किसी काल में, काल की किसी निश्चित अवधि में, घटित हुआ है, और इसलिए इस विश्व का कोई न कोई रचयिता होना चाहिए। एक महान् प्रथम कारण, एक शाश्वत, सर्वज्ञ और सर्व शक्तिमान् स्त्रष्टा अवश्य होना चाहिए और यह सारा विश्व उसी की कारीगरी है।

कोई अनन्त चेतन शक्ति ही यह समझ सकती है कि इस प्रकार का अणु जीवन का आधार बन सकता है। उसी शक्ति ने इस अणु का निर्माण किया है और उसी ने इसे जीवन धारण के योग्य बनाया है। उस शक्ति का नाम ही परमात्मा है।

रोबर्ट मौरिस पेज

(भौतिकीशास्त्रविद् रेडारविशेषज्ञ – नौसेनाविभाग – अमेरिका)

जब कोई उस सम्बन्ध का अध्ययन करता है जो मनुष्य और ईश्वर के बीच विद्यमान है या होना चाहिए, जब कोई मनुष्य उन शर्तों का अध्ययन करता है जो इन सम्बन्धों की स्थापना के लिए पूरी की जानी चाहिए और जब कोई गंभीरता से और पूरी तन्मयता के साथ उन शर्तों को पूरा करने के लिए तैयार होता है, तब व्यक्ति

के जीवन में उन सम्बन्धों की उपलब्धि इतने व्यापक रूप में होती है कि उसके मन में कहीं सन्देह को स्थान नहीं रहता । तब परमात्मा उसके लिए इतने निकट की और इतनी बड़ी निजी अनुभूति बन जाती है कि उसका विश्वास ही विकसित होकर ज्ञान का रूप धारण कर लेता है ।

प्रो. मैरिट स्टेनली कौंगडन

(ट्रिनिटी कालेज, फ्लोरिडा)

इस गतिशील विश्व–प्रपंच के लिए जो कार्य–कारणता, परस्पर सम्बद्धता, सन्तुलन, संकोचन, संरक्षण, प्रसारण, घात–प्रतिघात और क्रिया–प्रतिक्रिया अपेक्षित है और जो युग–युगान्तर तक चलती रहती है, वह विना किसी बुद्धि के कैसे संभव है ? यदि कोई बुद्धिमान स्त्रष्टा न हो, जो अपनी सृष्टि के माध्यम से और उसके अन्दर कार्य करे, तो ये सब क्रियाएँ समस्त प्रकृति के अन्दर कैसे जारी रह सकती हैं ?

लार्ड कैल्विन

(महान् वैज्ञानिक)

"यदि तुम काफी गम्भीरता से विचार करो, तो विज्ञान तुम्हें ईश्वर में विश्वास करने को बाध्य कर देगा"

प्रो. जान क्लीव लैण्ड कोथरान

(गणितज्ञ रसायन शास्त्री, मिनेसोटा विश्वविद्यालय, अमेरिका)

इसलिए हमारा तर्क संगत निष्कर्ष यह है, जिससे बचा नहीं जा सकता, कि न केवल सृष्टि की रचना हुई है प्रत्युत किसी ऐसे पुरुष की इच्छा और योजना के अनुसार सृष्टि की रचना हुई जिसमें बुद्धि और ज्ञान की पराकाष्ठा थी (सर्वज्ञ) जिसमें अपनी योजना के अनुसार इसके रचने और इसे जारी रखते का सामर्थ्य था (सर्वशक्तिमान) और जो सर्वत्र और समस्त विश्व भर में उसे लागू

कर सकता था (सर्वव्यापक) इसका अर्थ यह है बिना किसी संकोच के हम सर्वोच्च आत्मतत्त्व–ईश्वर, विश्व के रचयिता और नियामक के अस्तित्व के तथ्य को स्वीकार करते हैं ।

प्रो. डोनाल्ड हेनरी पोरटर

(गणितज्ञ भौतिकीविद् मैरियन कालेज)

प्रकृति की चाहे किसी भी प्रक्रिया पर विचार किया जाए और सृजन के किसी भी प्रश्न का अध्ययन किया जाए, वैज्ञानिक के तौर पर मुझे सन्तोष तभी होता है जब उसमें परमात्मा को मुख्य स्थान देता हूँ । ... जितने भी ऐसे सवाल है जिनका अभी तक जवाब नहीं दिया जा सकता, उन सबका ईश्वक की एक जवाब है ।

प्रो. एडवर्ड लूथर कैसल

(जीवविद् और कीटविद् अध्यक्ष – जीवविज्ञान विभाग, सनफ्रांसिस्को विश्वविद्यालय)

विज्ञान का खुले मन से (यदि वैज्ञानिक) अध्ययन करें तो उससे प्रथम कारण या कारणों के कारण की और आना ही पड़ेगा, उसी कारणों के कारण को हम परमात्मा कहते हैं ।

प्रो. वाल्टर ओस्कर लुण्डबर्ग

(मिनेसोटा विश्वविद्यालय, शरीरक्रियाविद् और जीवरसायनविद् – अमेरिका)

वैज्ञानिक विधि प्राकृतिक घटनाओं में नियमबद्धता और पूर्व कथनीयता पर आधारित है । सूक्ष्म दृष्टि से देखा जाए तो यह नियमबद्धता और पूर्व कथनीयता ही प्रकृति में परमात्मा का प्रकटीकरण है । परमात्मा की सत्ता से शून्य विश्व के ढ़ाचे में व्यवस्था और तरतीब या पूर्वकथनीयता की बात करना बुद्धि के अभाव का द्योतक है और यह एक ऐसा विरोधाभास है जिसका कोई अर्थ नहीं बनता ।

पाल क्लेरेंस एबरसोल्ड

(जीवभौतिकविद्, अणुशक्ति आयोग – अमेरिका)

विज्ञान के दृष्टिकोण से, मैं परमात्मा को किसी ऐसे पुरुष के रूप में नहीं सोचता जो किसी मानवीय राजा की तरह कहीं सिंहासन पर बैठा हो । ..... किसी भी दृष्टि से परमात्मा भौतिक पदार्थ नहीं है। यही कारण है कि भौतिक ढंग से उसकी व्याख्या या उसका वर्णन मानव की क्षमता से परे है। किन्तु साथ ही उसकी सत्ता को सिद्ध करने वाले भौतिक प्रमाणों की कमी नहीं है। परत्मा की रचना को देखकर यह पता लगता है कि उसकी शक्ति, ज्ञान और बुद्धिमत्ता अनन्त है।

यद्यपि विज्ञान इस बारे में बड़ी सम्भाव्य स्थापनाएँ कर सकता है कि सृष्टि और प्रलय कैसे होते हैं और कैसे ये तारे और अणुओं का संसार आदि बन जाते हैं किन्तु वह यह नहीं बता सकता कि ये द्रव्य और ऊर्जा कहाँ से आए और विश्व की रचना ऐसी सुव्यवस्थित क्यों है। सीधा विचार करने पर और स्पष्ट ढ़ग से तर्क करने पर परमात्मा का विचार कहीं न कहीं से आ ही जायेगा।

जो एक बात हम निश्चय पूर्वक जानते हैं वह यह है कि मानव और यह विश्व सर्वथा 'नास्ति' से सहसा 'अस्ति' में नहीं आ गये। ये दोनों सादि हैं और इनका एक आदि रचयिता भी है ।

प्रो. मारलिन बुक्स क्रैडर

(शरीरक्रियाविद्, ईस्टर्न नैजरीन कालेज)

इस विश्व पथ के प्रारंभ में मुझे जो कुछ दिखता है – वह शाश्वत ऊर्जा या द्रव्य नहीं है, न अपरिमेय नियति है न 'आद्यतत्त्वों ता आतस्मिक संगम' है, न 'महान् अज्ञात' है, प्रत्युत सर्व शक्तिमान् महान् प्रभु है ।

.... अनेकानेक छोटे बड़े उपकरणों से सज्जित हमारी प्रयोगशालाएं प्रोटोप्लाज्म के कुछ संघटक भागों को तैयार करने में तो सफल हो गयी है किन्तु जीव को पैदा करने में नहीं ।

ठीक अनुपात में समस्त आवश्यक तत्त्वों के अकस्मात् घटित होने की गणितीय संभावना नहीं है ।

यदि इस तरह कोई द्रव्य तैयार हो भी जाए तो मूलतत्त्व या वैद्युतिक आवेश, ताप तथा नव निर्मित पदार्थ को कायम रखने वाली और गति देने वाली, एवं इस समग्र दृश्यमान विश्व को नियंत्रण में रखने वाली, भौतिक शक्तियाँ कहाँ से आईं, यह प्रश्न फिर भी शेष रहता है ।

यदि जीवन प्रोटोप्लाज्म की लघु राशि से प्रारंभ हुआ है तो उस पर अवश्य किसी बड़ी शक्ति ने अपना कमाल दिखाया होगा, ताकि पृथ्वी पर बसे इन लाखों किस्म के जीव धारियों की रचना हो सके । ... मैं इस शक्ति को परमात्मा कहता हूँ।

जार्ज अर्ल डेविस

(भौतिकविद्, मैटीरियल लेबोरेटरी में न्यूक्लिओनिक्स विभाग के अध्यक्ष)

क्योंकि हम परमात्मा की हस्ती या नेस्ती को सिद्ध नहीं कर सकते। इसलिए हमारे पास सर्वोत्तम उपाय यही रह जाता है कि जो कुछ हम जानते हैं उसके आधार पर हम बुद्धिमत्ता पूर्ण अनुमान लगाएँ । इस तरह का अनुमान, जिस पर किसी भी उपलब्ध ज्ञान के सहारे तर्क पूर्ण ढ़ग से प्रहार नहीं किया जा सकता, यह है कि "कोई भी जड़ पदार्थ स्वयं अपने आपको उत्पन्न नहीं कर सकता"

... मैं ऐसे परमात्मा के बारे में विचार करना पसंद करता हूँ जिसने इस चराचर जगत् को उत्पन्न किया है, किन्तु स्वयं वह जगत् नहीं है, अलबत्ता वह इस जगत् पर शासन करता है और स्वयं इसमें अनुप्रविष्ट है।

थामस डेविस पार्क्स

(गवेषणा – रसायनविद् स्टेनकोई गवेषणा संस्था)

... और अकेला पानी ही तो ऐसा आश्चर्य जनक द्रव्य नहीं है ऐसे और कितने ही द्रव्य हैं जिन में सनसनीखेज विशेषताएँ हैं और हमारा सीमित मानवीय मस्तिष्क आश्चर्य से स्तब्ध होकर मौन भाव से घुटने टेक कर केवल सोचता ही रह सकता है ।

इन सब चमत्कारों के लिए मैंने, अपनी व्याख्या प्राप्त करली है वह सन्तोषजनक और समाधानपरक व्याख्या यह है कि प्रकृति में नियमबद्धता सर्वोच्च बुद्धिमान् के कारण और उसमें रचना कौशल किसी सर्वोच्च कुशल रचयिता के कारण है । उस रचयिता में मुझे जहाँ बुद्धिपूर्वक नियोजन दृष्टिगोचर होता है वहाँ यह भी दिखाई देता है कि उसमें अपनी बनायी सृष्टि के प्रति प्रेम भी है, हित भावना भी है।

प्रो. जान विलियम क्लोट्ज

(आनुवंशिकीविद् कन्कौर्डिया टीचर्स कालेज)

हमारा संसार इतना जटिल और इतना दुर्बोध है कि यह अकस्मात् से निर्मित नहीं हो सकता । यह इतनी सूक्ष्म गहनताओं से भरा हुआ है कि उसके कारणस्वरूप किसी बुद्धिमान् सत्ता की आवश्यकता है । वह किसी अन्धी और विवेकहीन शक्ति को चमत्कार नहीं हो सकता । इन गहनताओं को समझने के लिए विज्ञान हमारी सहायता करता है और इस प्रकार परमात्मा की और संकेत करने वाला हमारी प्रकृति विज्ञान बढ़ता जाता है ।

प्रो. ओस्कर लियो ब्राउएर

(भौतिकविद् और रसायनविद्, सान जांस स्टेट कालेज, केलिफोर्निया)

विज्ञान यह सिद्ध कर सकता है कि सर्जन का कार्य किसी समय प्रारंभ हुआ है जिसका अर्थ यह है कि किसी दिव्य शक्ति

या दिव्य बुद्धि की सत्ता है । विज्ञान यह भी सिद्ध कर सकता है कि किसी दिव्य ज्ञानवान् शक्ति के बिना इस विपुल विश्व में विद्यमान नियमों की गहन प्रणाली को और कोई नहीं बना सकता । परन्तु वह दिव्य सत्ता परमात्मा ही है और कोई नहीं, यह ज्ञान धर्म शास्त्रों द्वारा ही संभव है ।

यदि परमात्मा को सृष्टि कर्ता और विश्व की सर्वोच्च सत्ता मान लिया जाए तो इससे एक काम जरूर होगा – मनुष्य–मनुष्य के प्रति मनुष्यहीनता का बर्ताव करना छोड़ देगा । इसका अर्थ होगा मनुष्य में एक नई भावना का उदय, अन्तरात्मा का चैतन्य और निर्मल न्याय । इसका अर्थ होगा सबसे प्रेम और सबकी भलाई ।

नास्तिक का अर्थ है युद्ध और कलह । वैज्ञानिक के रूप में इनमें से मैं एक को भी पसंद नहीं करता । सिद्धान्त रूप में मैं इसे तर्क विरुद्ध और मिथ्या समझता हूँ । जहाँ तक इसके व्यावहारिक पहलू का सम्बन्ध है, मैं नास्तिकता को घोर विपत्ति का जनक मानता हूँ ।

प्रो. इरविंग विलियम नौब्लौक

(प्रकृतिविज्ञानविद्, मिशिगन स्टेट विश्वविद्यालय)

पदार्थ के खुर्दबीन से भी नजर न आने वाले सूक्ष्म अवयवो के उद्गम की व्याख्या करने में विज्ञान असमर्थ है । केवल आकस्मिकता के नियम के सहारे विज्ञान नहीं बता सकता कि जीवन के निर्माण के लिए अणु परमाणु कैसे एकत्रित हो गये । जो सिद्धान्त कट्टरता पूर्वक यह कहता है कि जीवन के सभी उच्चतर रूप अपने वर्तमान रूप में आकस्मिक परिवर्तनों या पुनर् मिश्रणों से आये हैं, उस सिद्धान्त को मानने के लिए भी श्रद्धा की जरूरत है, जो एक तरह से अयुक्तियुक्त बात कों मानने के समान है ।

... किन्तु मैं परमात्मा में विश्वास करता हूँ । मैं उसमें विश्वास इसलिए करता हूँ क्योंकि मैं यह नहीं समझता कि केवल अकस्मात् को प्रथम इलेक्ट्रोन या प्रोटोन के, या प्रथम परमाणुओं के या प्रथम

मस्तिष्क के उदय का कारण माना जा सकता है। मैं परमात्मा में इसलिए विश्वास करता हूँ क्योंकि चीजें जिस रूप में भी हैं, उनकी तर्क संगत व्याख्या केवल परमात्मा की दिव्य सत्ता को मान कर ही की जा सकती है।

प्रो. जान लियो ऐबरनेथी

(गवेषणा और रसायनविद्, फ्रेस्नो स्टेट कालेज, केलिफोर्निया)

जडवादी विचार धारा में भलाई और बुराई का कोई पूर्ण अर्थ नहीं है। मानवीय जीवन को बमों की वर्षा करके अस्तित्व शून्य बना देने में भी कोई बुराई नहीं होगी क्योंकि आखिरकार किसी न किसी प्रकार एक दिन समस्त जीवधारियों का अन्त तो हो ही जाता है।

किन्तु यदि परमात्माने विशिष्ट आप्त पुरुषों के माध्यम से इतिहास के किसी समय विशेष में मानव मात्र को कर्तव्य अकर्तव्य के सम्बन्ध में ज्ञान या उपदेश दिया है तो भलाई और बुराई का अर्थ स्पष्ट और पूर्ण हो जाता है। तभी पाप से बचने को कर्तव्य बताया जा सकता है। पूर्णता के लिए विज्ञान को भी इस प्रकार के सच्चे परमात्मा को मानना ही चाहिए।

रसेल लोवेल मिक्सटर

(प्राणिवद्, अध्यक्ष-विज्ञान विभाग, व्हीटन कालेज)

.... तर्क हमको यह मानने को बाधित करता है कि यहाँ जिन सदृशताओं का और विविध रूपों का वर्णन किया गया है उनको किसी दिव्य चेतना ने विचार पूर्वक योजित किया है, न कि यह मानने को कि जीवित पदार्थों के ये इतने विविध रूप तत्त्वों के आकस्मिक मेल से किसी तरह बन गये हैं, या परिस्थितियोंने किसी प्रकार तत्त्वों का जमघट लेकर उन्हें जीवित पदार्थों के रूप में सजाकर रख दिया है।

धर्म ग्रन्थ कोई विज्ञान की पुस्तक नहीं किन्तु विज्ञान के बुनियादी सिद्धान्त उसमें जरूर आते हैं। ... मेरे सामने जो सच्चाई हमेशा

चमकती रहती है और कभी बुझती नहीं, वह सच्चाई यह है कि धर्म ग्रन्थ का परमात्मा और प्रकृति द्वारा निर्दिष्ट परमात्मा एक ही है।

जेराल्ड टी. डेंन हारतोग

(गवेषक कृषिविभाग, अमेरिका)

(मुझे विश्वास है की) परमात्मा वनस्पति जगत् के आश्चर्यों और रहस्यों में, कभी विफल न होने वाले नियमों के माध्यम से अपने आपको लगातार प्रकट करता रहता है परमात्मा अपने को इन (क्रमबद्धता, जटिलता, सुन्दरता तथा पैतृक परम्परा) तरीकों में प्रकट करता है।

मेरे लिए, यह सब सिरजनहार परमात्मा की सत्ता के द्योतक हैं जिसका ज्ञान अनन्त है और शक्ति भी अनन्त है।

लैरेंस कोल्टन और वौकर

(वन अनुसंधान कर्ता वनस्पतिरचनाविद्, अध्यक्ष वन-प्रयोगशाला जार्जिया, अमेरिका)

यह सच है कि यह सब परमात्मा रूपी महान् शिल्पी की ही करामात है। ... उसके रचना कार्य इतने योजनाबद्ध होते हैं कि उनमें अत्यन्त उच्चकोटि की व्यवस्था दृष्टिगोचर होती है। ... परमात्मा के प्रयोजन और इच्छा को जानने के लिए उसे (मनुष्य को) खेतो और जंगलों का सूक्ष्म अध्ययन करता पड़ेगा तब प्राकृतिक अतिप्राकृतिक बन जायेगा और अतिप्राकृतिक में विश्वास करने का अर्थ है परमात्मा में विश्वास करना।

प्रो. बाल्टर एडवर्ड लैमर्ट्स

(वंशानुक्रमविद्, कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय)

..... प्राण धारियों की दुनियाँ में हम जो अन्तर देखते हैं उनकी व्याख्या जडवादी विकासवाद के सिद्धान्त से नहीं की जा सकती।

ये अन्तर स्पष्ट रूप से उस विशिष्ट बुद्धिमान् स्रष्टा की ओर संकेत करते हैं जिसने जीवित, प्राणियों को सीमित मात्रा में अन्तर के योग्य बनाया है।

प्रो. रलेस चार्ल्स आर्टिस्ट

(जीवविद् और वनस्पतिविद्, फ्रेंकफुर्त कालेज – जर्मनी)

सफलतापूर्वक परीक्षण करके यह बात प्रदर्शित नहीं की जा सकती कि घड़ी जैसा सूक्ष्मयन्त्र अकस्मात् बन गया अर्थात् उसे बनाने में किसी कारीगर के दिमाग और हाथ की जरूरत नहीं पड़ी। अपने आप चाबी लग जाने वाली घडी के बारे में भी यह नहीं कहा जा सकता कि किसी के चलाये विना ही वह चल पड़ी। जब जीवित कोश के बारे में हम पूछते है: "सूक्ष्मदर्शकयन्त्र से ही देखे जा सकने वाले सूक्ष्म और हैरत में डालने वाले कार्यों को करने वाला यह कोश अपने वर्तमान रूप में कैसे आया ? "इसमें गति कैसे प्रारंभ हुई ?" तो इसकी शुरुआत या इसके कार्यकलाप के जारी रहने के कारण की व्याख्या का प्रयत्न करते हुए जब तक हम युक्ति और तर्क के साथ यह स्वीकार नहीं कर लेते कि किसी चेतन बुद्धिमान् शक्ति ने उसे अस्तित्ववान् बनाया, तब तक हमें ऐसी कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा जिनसे हम पार नहीं पा सकते। वह चेतन और बुद्धिमान् सत्ता जो चिन्तन शून्य ज़ड द्रव्य से नितरां भिन्न है, परमात्मा है। ..... यह अनुमान विज्ञान को भी ग्राह्य भी है और मान्य भी। मेरी यह सुनिश्चित धारणा है कि परमात्मा है।

जार्ज हर्बर्ट ब्लाउण्ट

(प्रायोगिकभौतिकविद्, चीफ इन्स्ट्रमेन्ट इंजीनियर इंजिनियरिंग सेन्टर विश्वविद्यालय – कैलिफोर्निया)

मेरा परमात्मा में विश्वास है। परमात्मा में मेरी आस्था भी है। मेरे लिए परमात्मा का विचार केवल दार्शनिक चिन्तन नहीं है –

बल्कि मेरी व्यवहार जगत् की विचार धारा पर वह छाया हुआ है। परमात्मा मेरे दैनिक व्यवहार का अंग है।

.... यदि किसी को आस्तिकता के प्रमाण अपने चारों ओर के संसार में दृष्टिगोचर नहीं होते तो यही समझना होगा कि उसकी देखने की शक्ति ही जाती रही है ।

.... यह सहज शंका प्रायः यत्रतत्र प्रसृत दीखती है कि परमात्मा को मानने से मनुष्य की स्वतंत्रता छिन जाएगी । बौद्धिक स्वातन्त्र्य के पुजारी किसी विद्वान् को तो, बुद्धि के स्वातन्त्र्य में कुछ कभी करने वाला विचार खास तौर से भयप्रद लगता है ... परन्तु धर्म का यह रूप तो मनुष्य का अपना बनाया हुआ रूप है। आस्तिकता के साथ दार्शनिक अत्याचार कोई आवश्यक शर्त नहीं है ।

डोनाल्ड रोबर्ट कार

(भूरसायनविद्, परामर्शदाता, स्टैनफोर्ड अनुसंधान संस्था)

मेरी जरूरत ईसा से और ईश्वर से पूरी होती है इसलिए मैं उन पर विश्वास करता हूँ। उसके बाद भूरसायन के क्षेत्र का अध्ययन करने से मुझे इस तथ्य को हृदयंगम करने में और सहायता मिली कि परमात्मा ने इस विश्व की रचना की है। इसलिए मेरे लिए यह स्वाभाविक है कि मैं प्रकृति में भी परमात्मा का ही हाथ देखूं।

.... भूरसायनशाखा हरेक को यह सिखाती है कि वह चीजों को व्यापक पैमाने पर देखे, काल के सम्बन्ध में यह भूमि के इतिहास की अरबों वर्षों की इकाइयों में सोचे विश्व को चारों ओर से घेर लेने देश के सम्बन्ध में सोचे और विश्वव्यापी चक्रों को शामिल करनेवाली प्रक्रियाओं के सम्बन्ध में सोचे । इन सबकी विशालता मनुष्य को प्रभु की महत्ता समझने को विवश कर देगी।

पीटर डब्ल्यू स्टोनर

(गणितज्ञ और ज्योतिर्विद्, अध्यक्ष – विज्ञान विभाग वेस्टमौंट कालेज)

विज्ञान ने अब अनेक चीजों की आयु निर्धारित की है जिन में पृथ्वी, उल्कापिण्ड, सूर्या, आकाशगंगा, विश्व की आयु, तथा विभिन्न तत्त्वो के विकसित होने, विभक्त होने और उनकी मात्राओं के लिए आवश्यक काल। ये सब आयु लगभग आसपास ही बैठती हैं।

(बाईवल) उत्पत्ति खण्ड की केवल इसी बात से हमारी सहमति सम्भव हो सकती थी कि यदि सचमुच विश्व की शुरुआत है तो वह शुरुआत करनेवाला अवश्य परमात्मा ही होगा। कोई अन्य शक्ति इतनी समर्थ नहीं है।

क्लौड़ एम. हैथबे

(इंजिनीयर जनरल इलैक्ट्रिक कम्पनी)

.... यदि गणना करने वाली मेरी मशीन को किसी डिजाइनर की आवश्यकता थी तो मेरे मानवीय शरीर की इस जटिल भौतिक–रासायनिक–जैविक मशीन के लिए जो लगभग अनन्त ब्रह्माण्ड का एक अत्यन्त छोटा सा भाग है – डिजाइनर की कितनी अधिक आवश्यकता होगी ?

डिजाइन, क्रम, व्यवस्था इसें जो मन चाहे सो कहलो यह केवल दो कारणों का परिणाम हो सकता है, अकस्मात् का या डिजाइन का। क्रम जितना जटिल होगा, आकस्मिकता की उतनी ही कम संभावना होगी। हम क्योंकि लगभग अनन्त डिजाइनों के बीच में पड़े हुए हैं, इसलिए मैं परमात्मा में विश्वास किये बिना नहीं रह सकता।

मैं जो दूसरी बात कहना चाहता हूँ वह यह है कि विश्व का डिजाइन बनाने वाला प्रकृति से परे की वस्तु होना चाहिए। ....आधुनिक

भौतिक विज्ञान मुझे यह बताता है कि प्रकृति स्वयं अपने आप को क्रम में लाने में असमर्थ है ।

प्रो. मर्लिन ग्राण्ट स्मिथ

(गणितज्ञ और ज्योतिर्विद्, ग्रीनबिल कालेज)

कारण और कार्य को एक दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता। कार्य और कारण आन्तरिक रूप से एक ही है । मानव प्राणी के रूप में हम और हमारी चारों और की दुनियाँ कार्यों का एक समुच्चय ही है, और उस कार्य समूह के पीछे तथा उसकी तह में एक ऐसा अदृश्य मूल आदि कारण है, जिसे मैं ईश्वर कहता हूँ।

इनके अतिरिक्त, हरेक युग के साक्षर या निरक्षर जिनमें वैज्ञानिक भी शामिल हैं, उन लाखों लोगों की साक्षी है कि हमने अपनी आत्मा में ईश्वर की सत्ता का अनुभव किया है । उस साक्षी का हम क्या करें ? क्या उसे परे फेंक दें ? उसकी उपेक्षा कर दें ? लाखों लोगो नें 'जिस अवर्णनीय और गौरवपूर्ण आनन्द' का अनुभव किया है, क्या उसे हम आँखो से ओझल कर दें ? हुतात्माओं मिशनरियों के उस विश्वास पर जिसने उन्हें तनहाई, सख्तियों, कैद और मृत्यु तक का साहस से सामना करने की शक्ति दी, क्या हम दांत किटकिटांए, निर्लज होकर उनका उपहास करें और अपने आप से कहें की यह सब एक गलती थी ?

जहाँ तक मेरा सम्बन्ध है, मेरा विश्वास है कि परमात्मा है और जो परिश्रम पूर्वक उसको खोजते हैं उन्हें वह पुरस्कृत करता है ।

एड्विन फास्ट

(भौतिकीविद् भौतिक विभाग – ओकलाहामा विश्वविद्यालय ।)

जीवन का कोई सादा रूप बनाने के लिए भी इन परमाणुओं को लाखों की संख्या में एकत्र होना पडता है । और जब कोई

उनसे बड़ी और अधिक जटिल जातियों के बारे में सोचता है तब केवल अकस्मात् के आधार पर उन लाखों परमाणुंओ के एकत्र जमा हो जाने की संभावना अकल्पनीय हो उठती है।

.... तत्त्वों के एक स्थान पर एकत्र हो जाने से अकस्मात् ही ऐसा हो गया। या इस प्रकार के प्राणीयों का निर्माण और योजना किसी सृजनशील कर्ता के बिना ही हो गयी और उसमें तर्क, बुद्धि और अपने वंश को बढ़ाने के लिए प्रजनन क्रिया आदि बातों का स्वयं समावेश हो गया, यह सर्वथा असंभव है।

प्रो. जान एडोल्फ ब्यूलर

(रसायनविद् एण्डर्सन कालेज)

आजकल के वैज्ञानिकों का यह विश्वास है कि हमारे इस ग्रह पर प्रकृति के जो नियम काम करते हैं, सुदूर अन्तरिक्ष के बाह्य आकाश में भी वही नियम काम करते हैं। जहाँ कहीं भी हम देखें, हमें सर्वत्र विशिष्ट प्रयोजन, क्रम और व्यवस्था नजर आते हैं। मुझे मन में कोई संदेह नहीं है कि किसी सर्वोच्च बुद्धिमान शक्ति ने ही इस विश्व की योजना बनाई और उसका निर्माण किया और उसी के हाथों में इस विश्व की नियति खेल रही है।

जहाँ तक परमात्मा का सम्बन्ध है, उसको या उसके विचार को अनावश्यक मानने के बजाय, या उसे तथा कथित अज्ञेय वस्तुओं की कोटि में रखने के बजाय, हमें विश्व के नियमों और व्यवस्था में उसका दर्शन करना चाहिए और उसका आदर करना चाहिए। प्रकृति के नियमों की खोज करके मनुष्य 'अज्ञेय' की व्याख्या करने में समर्थ हो सकता है किन्तु मनुष्य प्रकृति के नियमों को पैदा करने में कभी समर्थ नहीं हो सकता। परमात्मा नियम–प्रदाता है, मनुष्य उन नियमों की खोज करता है और धीरे–धीरे प्रकृति की व्याख्या करनी सीखता है, वह प्रत्येक नियम, जिसकी भी मनुष्य खोज करता है, मनुष्य को परमात्मा को समझने के और निकट ले जाता है।

प्रो. एल्बर्ट मैकोम्स विन्चेस्टर

(प्राणिविद्, अध्यक्ष-प्राणि विभाग, स्टेट्स विश्वविद्यालय)

आज मुझे यह कहते प्रसन्नता होती है कि विज्ञान के क्षेत्रों में अनेक वर्षों तक अध्ययन और कार्य करने के पश्चात् परमात्मा के प्रति मेरा विश्वास विचलित नहीं हुआ, बल्कि और अधिक दृढ हो गया और उसको एक सबल आधार मिल गया ।

जिन लोगों का विश्वास गम्भीर चिन्तन पर आश्रित है । उनके लिए यह (वैज्ञानिक खोज) एक और कदम होगा जिसने उस सर्वोच्च शिल्पी को, जिसने वे समस्त चमत्कार पैदा किये हैं जिन्हें मनुष्य अत्यन्त प्रयत्नपूर्वक अनावृत करने का प्रयत्न कर रहा है, कारीगरी को समझ सकेंगे ।

ओलिन कैरोल कार्कैलिट्ज

(रासायनिक इंजिनीयर गवेषणा रसायनविद् – शैल ऑयल कम्पनी)

विश्व की योजना, कम और व्यवस्था के पीछे एक 'अति चेतना' है । इसी शक्ति ने समस्त द्रव्य और ऊर्जा को किसी निश्चित समय में पैद किया है । उसीने आकाशीय ग्रह नक्षत्रों को इस प्रकार बांध दिया और उनमें उसने ऐसी मूल प्रेरणा भर दी है कि वे विश्व का विस्तार करने के लिए खलते रहें । उसने पृथ्वी को बना कर उसमें ऐसी स्थितियाँ पैदा कर दीं, जो जीवन के अनुकूल हो । ... इसी सत्ता ने उस मनुष्य में ऐसी आत्मा का आधान किया है जिसका अपना व्यक्तित्व है और इच्छा है । उसीने मनुष्य के अन्दर ईश्वर के अस्तित्व का बोध पैदा किया है । उसने मनुष्य में नैतिक स्वभाव पैदा किया है जो स्वयं परमात्मा के स्वभाव के अनुकूल है । उसी के आदेश के नियम और कम की सत्ता है । सौंदर्य, सत्य, साहस, ईमानदारी, भलाई, प्रेम तथा अन्य गुण स्वयं परमात्मा के इन्हीं गुणों से मनुष्य के अन्दर आते हैं । मनुष्य को बुद्धि भी परमात्मा की बुद्धि से ही आई है ।

एडमण्ड कार्ल कौर्न फैल्ड

(गवेषणा रसायनविद् अध्यक्ष – आरगैनिक कैमिकल डिवीजन)

मेरा यह दृढ विचार है कि परमात्मा एक ऐसी सत्ता है जिसने इस विश्व की योजना बनाई है, उसको रचा है तथा धारण किया है। प्रयोगशाला के अत्यन्त सूक्ष्म अवयवों में जटिल रचनाओं के अध्ययन में श्रम करते हुवे मैं प्रायः ईश्वर के अनन्त बुद्धिचातुर्य की भावना से हतप्रभ हो गया हूँ। ... जब किसी मनुष्य निर्मित सरलतम यन्त्र विन्यास के लिए भी किसी निर्माता और योजयिता की आवश्यकता होती है, तब उससे हजारों गुणा बड़े और जटिल यन्त्रविन्यास के लिए यह कल्पना करना कि वह स्वयं निर्मित हो गया और स्वयं विकसित हो गया, मेरी समझ से सर्वथा परे की बात है।

"जीवन सम्भवतः अकस्मात् ही पैदा हुआ है यह कहना ठीक ऐसे ही जैसे कि किसी छापेखाने में विस्फोट हो जाने से कोई बृहद् शब्दकोष तैयार हो गया हो" मैं इस वक्तव्य का बिना किसी हिचक के समर्थन करता हूँ।

प्रो. अर्ल चेस्टर रेक्स

(गणितज्ञ और भौतिकविद्, दक्षिण कैलिफोर्निया विश्व विद्यालय)

एक वैज्ञानिक के रूप में परमात्मा और इस विश्व के सम्बन्ध में जो मेरे निष्कर्ष हैं उनकी पुष्टि पवित्र धर्मग्रन्थों से होती हैं और मैं इन धर्मग्रन्थों पर विश्वास करता रहा हूँ और इस विश्व के उद्गम और संचालन के सम्बन्ध में जो भी कुछ वे कहते हैं उस सब में मैं विश्वास करता हूँ। धर्मग्रन्थ और विज्ञान में कोई मतभेद नहीं है। शर्त केवल यही है कि धर्मग्रन्थ की व्याख्या बुद्धिमतापूर्वक की जाए।

डॉ. माल्कम डन्कन विन्टर

(जूनियर – मैडिकल इन्टरनिस्ट चिकित्साध्यक्ष, टी.ए.सी. अस्पताल)

अपनी समस्त जटिलताओं के साथ यह पृथ्वी और यह विश्व, विभिन्न रूपों में जीवन और अन्ततः अत्युत्कृष्ट चिन्तन शक्ति वाला स्वयं मनुष्य ये सब इतनी उलझन भरी चीजें हैं कि इनकी रचना अकस्मात् नहीं हो सकती। इसलिए इन सब के पीछे कोई सर्जनहार अथवा महान् बुद्धिमान् अर्थात्, परमात्मा होना ही चाहिए। मनुष्य के चारों और जो भी कुछ है, उस सबका ऊर्ध्व बिन्दु मनुष्य ही है। इसलिए यह भी समझ में आता है कि मनुष्य के रचयिता परमात्मा की मनुष्य में रुचि अवश्य ही होनी चाहिए।

प्रो. डेल स्वार्तजेन दुबर

(मृदाभौतिकीविद्, कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय)

..... "दृश्यमान व्यवस्था और कम केवल उस दिशा की अभिव्यक्ती है जिस दिशा में विकास हुआ है और वह मूलतः अव्यवस्थित और अस्तव्यस्त से शुरु हुई है। किन्तु इस प्रकार की बात मानना सामान्य बुद्धि के अनुभवों के सर्वथा विपरीत है। और वैज्ञानिक दृष्टि से बोल्टजमान के "थर्मोडायनेमिक्स के दूसरे नियम" के द्वारा, जिसे सब आधुनिक वैज्ञानिक स्वीकार करते हैं, इस बात को खण्डित कर दिया गया है। इसलिए यह लेखक दूसरे विकल्प को स्वीकार करता है। और वह दूसरा सीधा साधा विकल्प यह है कि प्रकृति में व्यवस्था केवल इसलिए दृष्टि गोचर होती है क्योंकि व्यवस्था के निर्देशन के लिए ही उसका निर्माण किया गया है। निस्संदेह इसका अर्थ होता है किसी अनुभवातीत और परात्पर बुद्धि शक्ति की विद्यमानता को स्वीकारना।

महान् व्यवस्थापक की सत्ता से इन्कार करना ठीक उतना ही तर्क विरुद्ध है जैसे किसी पीली पकी लहराती फसल से शोभायमान हरे भरे खेत की तो तारीफ करना किन्तु साथ ही सड़क के किनारे अपनी छोटी सी झोपड़ी में रहने वाले गरीब किसान की मौजूदगी से इन्कार करना ।

प्रो. लीस्टर जौन जिमरमैन

(मृदा, वनस्पति क्रियाविज्ञानविद् – गोशेन कालेज)

यह काफी नहीं है कि प्रकाश, रासायनिक द्रव्य, हवा और पानी की उपस्थिति मात्र से पौधे बढ़ते रहें। बीज के अन्दर ऐसी एक शक्ति है जो अनुकूल परिस्थिति में सक्रिय हो उठती है और तब अनेक जटिल और समरस प्रतिक्रियाएँ काम करने लगती हैं। ..... वनस्पतियों के बढने की इन नाना प्रक्रियाओं का कोई अवलोकन करे तो उसे वहाँ कम, सौंदर्य समरसता और निर्भरता दिखाई देती है ।

वह कौन था जिसने प्रजनन के और वनस्पतियों के विकास के नियम बनाये और उन्हें चालु किया ? स्वभावतः ही एक प्रश्न और अत्यन्त आधारभूत प्रश्न की ओर ले जाता है कि सबसे पहले पौधे कहाँ से आये ? वे अकस्मात् ही पैदा हो गये, यह तो विचार कोटि से भी परे की बात है। और तब किसी बुद्धिमान मूल उद्भावक को मानना आवश्यक हो जायेगा। .... समस्त प्रकृति का नियंत्रणकर्ता परमात्मा है और वही इसको लगातार धारण करता है । ज्यों ज्यों मैं मिट्टियों और पौधों में प्रकृति के कार्यकलाप को देखता हूँ और उसका अध्ययन करता हूँ त्यों, त्यों ईश्वर के प्रति मेरा विश्वास लगातार बढ़ता जाता है। और मैं प्रतिदिन उसके सामने आश्चर्य से अभिभूत होकर उसकी स्तुति करता हुआ नत मस्तक हो जाता हूँ ।

प्रो. राबर्ट हौर्टन कैमरोन

(गणितज्ञ, मिनेसोटा विश्वविद्यालय)

परमात्मा की सत्ता में मेरा विश्वास भी परीक्षणात्मक प्रमाण पर आधारित है। अब से बत्तीस साल पहले कार्नेल विश्वविद्यालय के एक शयन कक्ष में यह परीक्षण किया था और परमात्मा ने मुझे एक नया दृष्टिकोण, नए दिशानिर्देश और नये आनन्द दिये। उसके बाद से परमात्मा की सत्ता का प्रश्न मेरे लिए इतना महत्त्वपूर्ण हो उठा कि मैं अपना पद, अपनी वैज्ञानिक प्रतिष्ठा और इस पृथ्वी पर जो कुछ भी मेरा है, अक्षरशः उस सबको छोड़ने को तैयार हो जाऊँगा, किन्तु आस्तिक बनने से पहले की अपनी अवस्था में जाने को तैयार नहीं होऊँगा।

एमलर डबल्यू मौरेर

(गवेषणा रसायनविद्, अमेरिका कृषिविभाग)

रसायनविद् के रूप में मैं ईश्वर–पुरुष में विश्वास करता हूँ। मेरा विश्वास है कि एक "दिव्य बुद्धिमान्" है जिसने संसार को और समस्त पदार्थों को बनाया है और मेरे लिए वह 'दिव्य बुद्धिमान् या ईश्वर–पुरुष एक ही चीज है। मेरे लिए यह असंभव है कि मैं विश्व के नियम और क्रम को केवल अकस्मात् का परिमाण कल्पना कर सकूँ। गुत्थियाँ इतनी अधिक है कि केवल अकस्मात् को मानने से वे सुलझ नहीं सकतीं। नियम क्रम व्यवस्था और बुद्धिमत्ता ये सब साथ साथ चलते हैं।

वैज्ञानिक के रूप में मैं यह भी विश्वास करता हूँ कि ईश्वर का इस संसार पर स्थायी नियंत्रण है। ईश्वर यह जानता है कि प्रकृति के नियमों में भी निश्चितता और स्थिरता है। जब मैं अपनी प्रयोगशाला

में कदम रखता हूँ तब मैं जानता हूँ कि जो नियम आज सत्य हैं वे कल भी सत्य रहेंगे और परसों भी सत्य रहेंगे और जब तक यह विश्व विद्यमान है, तब तक सत्य रहेंगे। यदि ऐसा न हो तो प्रयोगशाला में मेरा जीवन परेशानियों की श्रृंखला बन जाए, ऐसा जीवन जो अनिश्चयों और सन्देहों से भरा हो और जिसके कारण समस्त वैज्ञानिक गति भी व्यर्थ हो जाए, या सच कहूँ तो असंभव हो जावे।

वेने यू. आल्ट

(भू रसायनविद् रिसर्च फैलो, भूरासायनिक प्रयोगशाला पैली सेड्स, न्यूयार्क)

.... इस विश्व में जो चमत्कारपूर्ण व्यवस्था दृष्टिगोचर होती है वह किसी अनियन्त्रित और यादृच्छिक अकस्मात् की अपेक्षा निश्चित रूप से परमात्मा की ओर अधिक संकेत करती है।

"बहुत कम लोगों ने वस्तुतः प्रकाश की गति को नापा होगा किन्तु सर्वत्र उसे एक ज्ञात और आप्त सिद्धान्त के रूप में माना जाता है। ठीक इसी प्रकार जिन चीजों को वैज्ञानिकों ने देखा नहीं है, कल्पना के आधार पर वे उनके माडल तैयार करते हैं और परिकल्पना की वैधता को स्वीकार करते हैं। किसी ने भी प्रोटोन या इलेक्ट्रोन को देखा नहीं है, किन्तु उसके प्रभाव को देखा है।

यह स्पष्ट है कि व्यक्ति के लिए इस प्रकार के ज्ञान का अधिकांश भाग विश्वास के आधार पर ही स्वीकार किया जाता है। ....श्रद्धा की इसी प्रक्रिया से मनुष्य ईश्वर की सत्ता के विश्वास तक पहुँचता है।

वैज्ञानिक व्यक्ति का अनुभव सदा यह रहा है कि कार्य का कारण, अवश्य होना चाहिए। इसलिए तर्क की दृष्टि से वैज्ञानिक पहला व्यक्ति होगा जो इस समस्त सृष्टि में और इसके सूक्ष्मतम अंश में निरन्तर रुचि रखने वाली सर्वशक्तिमान् सर्वज्ञ और सर्व व्यापक परमसत्ता की परिकल्पना करेगा।

डॉ. पाल अर्नेस्ट एडोल्फ

(फिजीशियन और सर्जन, सेंट जान विश्वविद्यालय शंघाई – चीन)

मैं यह कहूँगा कि मैं स्वयं परमात्मा की सत्ता और वास्तविकता को निश्चित रूप से स्वीकार करता हूँ। केवल आध्यात्मिक अनुभवों के आधार पर मैं इस परिणाम पर नहीं पहुँचा हूँ बल्कि जिस बात को मैंने विश्वास के रूप में स्वीकार किया है इसे डाक्टरी प्रैक्टिस ने भी पुष्टि की है।

मनश्चिकित्सक जिन महत्त्वपूर्ण कारणों का निर्देश करते हैं उनमें से कुछ ये हैं: अपराध, आक्रोश, भय, चिन्ता, विक्षोभ, अनिश्चय, सन्देह, ईर्ष्या, द्वेष, स्वार्थ और उदासी। दुर्भाग्य की बात यह है कि अनेक मनश्चिकित्सक बीमारी पैदा करने वाले भावावेग की गडबड़ियों के कारणों को तो तलाश लेते हैं, किन्तु उन गड़बड़ियों का इलाज करने में वे जिन विधियों का प्रयोग करते हैं उनमें ईश्वर विश्वास जैसी बुनियादी चीज की उपेक्षा कर जाते हैं।

..... तभी मुझे इस चीज का भान हुआ कि मुझे शरीर के उपचार के साथ साथ आत्मा का भी उपचार करना चाहिए और डाक्टरी और शल्य क्रिया सम्बन्धी उपायों मे विश्वास के साथ मुझे अपने ईश्वर विश्वास का भी प्रयोग करना चाहिए ... केवल इसी तरीके से, मैंने अपने मन में सोचा कि मैं मरीज की वह पूर्ण चिकित्सा कर सकता हूँ जिसकी उसे आवश्यकता है।

.... इसके बाद और अधिक गंभीर विचार करने पर मैने देखा कि वर्तमान चिकित्सा सम्बन्धी उपचार में और परमात्मा में मेरा जो विश्वास है वह आधुनिक चिकित्सा दर्शन की जरुरतों को भी पूरा करता है।

हाँ, परमात्मा है, सचमुच है। मैं जानता हूँ – मुझे उसका पुष्कल अनुभव हुआ है। टूटी हुई हड्डियों और टूटे हुए दिलों का उपचार उसी के माध्यम से होता है।

प्रो. सेसिल वोइस हैमान

(जीवविज्ञानविद् अध्यक्ष-विज्ञानगणितविभाग, एस्बरी कालेज)

मैं विज्ञान के साम्राज्य में जहाँ कही भी पदार्पण करता हूँ वहीं मुझे नियम, व्यवस्था, क्रम और सर्वोच्च सत्ता का सबूत मिलता हूँ।

क्या यह आकस्मिकत घटना ही है कि केसर का छोटा सा कण पुष्प गर्म में गिर पड़े और उसमें से एक बीज पैदा है जाए ? क्या यह अधिक युक्ति संगत नहीं है कि हम इस बात में विश्वास करें कि परमात्मा के अदृश्य हाथों ने उन नियमों के द्वारा इन चीजों की व्यवस्था की है जिन नियमों को सीखना हम शुरु ही कर रहे हैं।

काश, लोगों को यह बोध होता कि ये खोजें इस विश्व के पीछे विद्यमान किसी सर्वोच्च बुद्धिमान सत्ता के समीप है।

हाँ ! मुझे ईश्वर में विश्वास है, जो केवल सर्वशक्तिमान् देवता हो नहीं है, और जिसने इस विश्व की रचना ही नहीं की है, एवं इसे धारण ही नहीं किया है, अपितु वह ऐसा ईश्वर है, जिसको अपनी सृष्टि के सर्वोत्कृष्ट प्राणी, मनुष्य की चिन्ता भी है।

यह दृढ़ विश्वास ईसाई मतावलम्बी अमेरिका की संस्कृति से ही नहीं आया, किन्तु प्रकृति के चमत्कारों के वैज्ञानिक पर्यवेक्षण से और मेरी आत्मा के अन्दर विद्यमान ईश्वर को अनुभूति की परिक्षणात्मक जागरूकता से भी आया है।

एण्ड्र्यू कौन्वे आइवी

(शरीरक्रियाविज्ञानविद्। विश्व विख्यात वैज्ञानिक, अमेरिका के युद्ध मन्त्री के परामर्श दाता। १३२० वैज्ञानिक लेख अनेक महत्त्वपूर्ण विभागों संस्थानों के अध्यक्ष)

परमात्मा की सत्ता से इन्कार किया जा सकता है, जैसा कि कार्ल मार्क्स और लेकिन जैसे नास्तिकों ने किया, किन्तु नास्तिकों ने ऐसा कोई प्रमाण नहीं दिया, जिसे उनकी इन्कारी का समर्थन करने वाली युक्ति--युक्त सिद्धि कहा जा सके। ... किन्तु परमात्मा

है, इस सम्बन्ध में मैंने युक्तियुक्त प्रमाण पढ़े भी है और उनका अध्ययन भी किया है। मैनें यह भी देखा है कि परमात्मा के प्रति सच्चे विश्वास का जनता पर क्या असर पड़ता है और परमात्मा के प्रति अविश्वास से जनता कितनी भीरु बन जाती है।

जिस ईश्वर ने हरेक वस्तु को पैदा किया है, जो विश्व के अन्दर और बाहर ओत प्रोत है और जो सदा मेरे और तुम्हारे हित को कामना करता है, उसमें पहले तो मेरा विश्वास तर्क पर आधारित है, फिर निष्ठा, आशा और प्रेम पर। यह निष्ठा, आशा और प्रेम भी मुझ में तब तक नहीं हो सकते जब तक वे तर्क पर आधारित न हों।

तर्क से परे भागने की आवश्यकता नहीं है। तर्क का ठीक ढ़ंग से और जोर के साथ प्रयोग करना चाहिए। जो श्रद्धा तर्क पर आधारित नहीं है, वह दुर्बल श्रद्धा है और खण्डन तथा परेशान करने वाले आघातों से वह छिन्न भिन्न हो सकती है। यदि धार्मिक श्रद्धा भी तर्क पर आधारित न हो तो उससे आचार व्यवहार दूषित हो होता है। उस तर्क से और विचार के उन सिद्धांतो से परे नहीं भागना चाहिए जिन पर हमारे दैनिक सांसारिक जीवन में प्रकट होने वाले कार्य और विश्वास टिके हैं। और जिन पर हमारे महानतम वैज्ञानिकों के विचार और कार्य आधारित हैं। ईश्वर, विश्वास तर्क और विचार के उन्हीं सिद्धान्तों पर आधारित है जिन पर भौतिक प्रगति का भविष्य में विश्वास टिका है। ... यदि तर्क भौतिक प्रगति का आधार बनाया जा सकता है तो आध्यात्मिक या नैतिक प्रगति के लिए उसे आधार क्यों नहीं बनाया जा सकता है? हर एक को इस योग्य होना चाहिए कि वह अपने धार्मिक विश्वास के लिए साहस के साथ तर्क पेश कर सके और अपने सदाचरण के द्वारा वह उस विश्वास की सच्चाई भी सिद्ध कर सके।

जब मैं तीन साल का था, तब मैं ने अपने माँ बाप से पूछा — 'मुझे किसने बनाया ? — पक्षियों को किसने बनाया ? हमारी गाय

को किसने बनाया ? इस संसार को किसने बनाया ? जीवन के तथ्य, या मेरी इन्द्रियानुभव, मेरे विकसित होते हुए मन पर ऐसी क्रिया कर रहे थे कि मेरा बालमन और मेरी निश्छल बुद्धि भी इस परिणाम पर पहुँची थी कि कोई भी 'यन्त्र बिना निर्माता के' नहीं बन सकता।

बालक का यह ज्ञान और यह तथ्य कि उसने पूछा है 'मुझे किसने बनाया और संसार को किसने बनाया' यह सिद्ध करता है कि बालक ने कार्यकारणता के बुनियादी सिद्धान्त को खोज लिया है। इस सिद्धान्त को ये भी कहा जा सकता है कि विना निर्माता के कोई यन्त्र नहीं हो सकता क्योंकि प्रत्येक परिवर्तन के लिए कुछ न कुछ कारण होगा।

चिन्तन की प्रवृत्ति को बताने के लिए एक दूसरा तरीका भी है – व्यवस्था सर्वत्र स्पष्ट है, व्यवस्था के पीछे व्यवस्थापक होना चाहिए, उस व्यवस्थापक में अनन्त गुण होने चाहिए और वह परमात्मा ही हो सकता है। कार्य और कारण के सम्बन्ध का प्राकृतिक नियम इतना जबर्दस्त है कि तीन से पाँच साल तक के बच्चे का विकसित होता हुआ मन भी यह जान लेता है कि कोई न कोई सृष्टि कर्ता होना चाहिए।

यदि इस भूतल पर जीवन को उत्कृष्ट बनाना है और उसे अतीत की विशेषताओं से सन्निविष्ट करना है, तो किसी दिव्य शक्ति के पथ प्रदर्शन की आवश्यकता है।

ईश्वर विश्वास से मनुष्य में जैसा आत्मिक बल आता है, वह इस बात की गारंटी है कि उस प्रकार का विश्वास करने वाले व्यक्ति को दुर्गति कभी नहीं हो सकती। दूसरा कारण यह है कि ईश्वर विश्वास विश्व का और जीवन का परिपूर्ण अर्थ देने के लिए अपेक्षित है और विचारशील लोग इस प्रकार के अर्थ की हमेशा तलाश करेंगे।

• • •